

Bh. 14, 7, 2, 17. गुह्यो गङ्गनामोचरः R. 2, 85, 5. विन्ध्यस्य गुह्याश्च गङ्गानानि च 4, 48, 2. गङ्गानानि नदीनां च 14. गिरिवरगङ्गे BHART. Suppl. 25. श-
ल्लकी ° MBh. 12, 4283. वृत् ° KATHAS. 10, 91. VARAH. BRH. S. 53, 92. वृत्तवा-
टिका ° MRĪKĪ. 108, 4. 5. वन ° PAÑKĀT. 87, 7. 96, 5. 114, 8. 228, 13. गङ्गे
ऽगिरिवोत्सृष्टः तिरप्रं संजायते गङ्गान् MBh. 1, 5627. R. 6, 9, 6. Gī. 7, 4. न-
नत्रतारा ° Dickicht, eine dichte Menge R. 1, 35, 16. धर्म ° MBh. 11, 125.
नंसार ° 126. 153. 1, 583. Nach den Lexicographen: Wald AK. 2, 4, 1, 1.
TRIK. 3, 3, 237. H. 1110. H. an. MED. Höhle TRIK. H. an. MED. Schmerz
diess.

गङ्गत्व (von गङ्ग) n. Dichtigkeit: कुत्तादीनामतिगङ्गत्वम् ŚĪB. D. 12,
5. Undurchdringlichkeit: न विवेक्तुं च ते प्रश्नमिमं शक्नोमि निश्चयात् । सू-
न्मवाद्गङ्गत्वाच्च कार्यस्यास्य च गौरवात् ॥ MBh. 2, 2355.

गङ्गवत् (wie eben) adj. mit Schlupfwinkeln —, mit Dickichten ver-
sehen: देशो गुह्यागङ्गवान् R. 4, 48, 6. लतागङ्गवान् 50, 3.

गङ्गाम् (wie eben), गङ्गनायते etwas Böses im Schilde führen (im Ver-
steck lauern) P. 3, 1, 14, Vārtl. — Vgl. कलाय्.

गङ्गीय adj. von गङ्ग P. 4, 2, 138.

गङ्गान् (Nebenform von गङ्गम्) n. Tiefe: समुद्र इव वासं गङ्गानां (die
Ausg.: गङ्गानां) TB. 2, 7, 3, 6.

गङ्ग ein aus गङ्गर् gefolgertes Wort gaṅga अण्मादि zu P. 4, 2, 80.

गङ्गर् (dess. Ursprungs wie गभीर्, गङ्ग; parox. Nir. 14, 11. proparox.
AV. oxyt. U. n. 3, 1. gaṅga अण्मादि zu P. 4, 2, 80) 1) adj. f. आ und ई tief,
undurchdringlich: (लेत्रम्) गुल्मतृणवीरुर्दिगङ्गर्गमिव Bhaṅ. P. 5, 14, 4. (वि-
पिनम्) नलवेणुशरस्तम्बकुशकीचकगङ्गर्म् 4, 6, 13. गुर्वर्गगङ्गा wegen des
tiefen Sinnes undurchdringlich, unfasslich 3, 16, 14. या क्षोषा गङ्गरी
माया (विश्लोः) निद्रति जगति स्थिता HARIV. 2845. — 2) n. SIDDH. K.
249, b, 2. a) Abgrund, Tiefe; s. गङ्गरेष्ठ. Wasser NAIGH. 1, 12. NIR. 14,
11; vgl. गङ्ग. — b) Versteck, Dickicht: अण्णयाणया गङ्गर् सचस्व AV.
12, 2, 53. तं गङ्गरे प्रकाशे वा पोथयिष्यामि MBh. 4, 727. गिरिगङ्गराणि
3, 12343. 13, 6839. R. 4, 18, 4. RAGH. 2, 46. RT. 1, 21. VP. 195. fg. गौरोगु-
रैर्गङ्गर्माविवेश RAGH. 2, 26. वेणुगङ्गर् सुCR. 2, 340, 4. PAÑKĀT. 228, 13.
दिमवत्प्रतिमे जटामाएल्लगङ्गरे R. 1, 44, 10. Uebertr. so v. a. undurch-
dringliches Geheimniß, Räthsel: गङ्गर् प्रतिभात्येतन्मम MBh. 13, 1388.
Nach den Lexicographen: Höhle AK. 2, 3, 6. 3, 4, 25, 185. TRIK. 3, 3, 345.
H. 1033. an. 3, 549 (m). MED. r. 149 (lies: गङ्गर्). In dieser Bed. auch f.
गङ्गरी ÇABDAR. ind ÇKDR. — n. Wald MED. — m. Laube, Gebüsch. = कुञ्ज
H. an. = निकुञ्ज MED. Statt dessen गुञ्जा TRIK. und überdies गङ्गर् n.
— c) ein aus der Tiefe kommender Seufzer H. 1402. — d) Heuchelei AK.
3, 4, 25, 185. H. an. MED.

गङ्गरित (von गङ्गर्) adj. in einem Versteck befindlich: याज्ञसेन्या
वचः श्रुत्वा कृत्वा गङ्गरितो ऽभवत् MBh. 2, 2294.

गङ्गरेष्ठ (गङ्गरे. loc. von गङ्गर्, + स्थ) adj. auf dem Grunde —, in
der Tiefe befindlich: या ते अग्रे ऽयःशया तूर्वाषिष्ठा गङ्गरेष्ठा VS. 5, 8.
Hiervon ist SV. I, 4, 2, 2 eine Entstellung. काव्येय च गङ्गरेष्ठार्थं च
VS. 16, 44. तं उदर्शं गूढमनुप्रविष्टं गङ्गाहितं गङ्गरेष्ठं पुराणम् । अध्यात्म-
योगाधिगमेन देवं मवा KATHOP. 2, 12.

1. गा (vgl. गम्). जिगाति; अगाम् (P. 2, 4, 45. 77. Vop. 9. 13). गाम्. गा-
त्. गुम्. अगन् (3te pl. Bhaṅ. P. 1, 9, 40); गङ्गि, गधि; जिगाय (wie von

einer Wurzel जी) TB. 3, 1, 2, 15. गेषम्, गेष्य; गौतवे; अगायि P. 2, 4, 45, Sch.
अगासाताम् 77, Sch. Die ved. Formen जिगाति und जिगायौत् NAIGH. 2, 14
sind noch nicht nachzuweisen; eben so wenig गति DHĀTUP. 22, 53. Aus
der klassischen Literatur ist vom simpl. nur der aor. अगात् zu belegen;
perf. u. s. w. und med. s. u. अधि. 1) gehen, kommen; gehen zu, nach;
kommen zu, nach (जिगाति singen nach DhĀTUP. 25, 25. geboren werden
nach Vop.): य सृते चिद्रास्पदेभ्यः RV. 8, 2, 39. सोमो जिगाति गात्विवृत्वा-
नमिति निष्कृतम् 3, 62, 13. 9, 96, 9. जिरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः 3, 12,
2. स्वेषु लोेषु प्रथमो जिगाति 10, 8, 2. स्वरगाम् AV. 18, 2, 45. देवाजिगा-
ति सुप्रयुः ved. P. 7, 4, 35, Sch. 38, Sch. 8, 2, 89, Sch. इममघानं यमगाम दू-
रात् RV. 1, 31, 16. प्राज्ञो अगाम नृत्ये 10, 18, 3. मा पुनर्गाः 108, 9. AV. 5,
30, 1, 14. मा ते मनस्तत्र गात् 8, 1, 7. 18. 18, 3, 62. मा नो गृह्ण्यो धेनवो
गुः RV. 1, 120, 8. तेनं गेष्य सुकृतस्यं लोकम् AV. 4, 11, 6. 14, 6. 11, 1, 37.
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् ÇAT. Br. 1, 9, 1, 17. 2, 2, 2, 17. 12, 3, 4, 1. 14, 4, 3, 23.
KĀTJ. Ç. 12, 2, 18. — मा गाः ÇĀK. 35. VID. 120. अगाद्वास्तिनयुर्म् Bhaṅ.
P. 1, 13, 1. BHATT. 5, 108. 6, 90. अगुरजम् Vop. 3, 29. अगायि भवता P. 2,
4, 45, Sch. अगासातां ग्रामो देवदत्तेन 77, Sch. अयुनैषो ऽभिजिन्नाम योगो
मौहूर्तिको ऽगात् ist gekommen Bhaṅ. P. 3, 18, 27. अन्यदा जिगति राम
इत्ययं शब्द उच्चरित एव मामगात् kam zu mir so v. a. kam mir zu RAGH.
11, 73. — 2) in einen Zustand gerathen, theilhaft werden: सिद्धिमगात्
MBh. 3, 10697. कृषम् R. 5, 91, 25. विषादम् 6, 10, 37. दुर्मम् KATHAS. 5, 135.
शुचम् BHATT. 3, 51. प्रकृतिमगन्किल यस्य गोपबधः Bhaṅ. P. 1, 9, 40. परमा-
कुन्ताम् VID. 137. प्रियभावुकताम् BHATT. 4, 13. विवेकदृष्टवम् 2, 46. यु-
निवामगम्यम् 3, 21. — desid. जिगीषति zu gehen verlangen: गतिं जिगी-
षतः पादौ रुरुकृते ऽभिकामिकाम् Bhaṅ. P. 2, 10, 25.

— अचक् hingehen zu, kommen zu: अचो नाचक् सदंनं जानती गात्
RV. 1, 104, 5. अचक् सूरिन्सर्वताता जिगात् 7, 37, 7. 2, 24, 12. 3, 22, 3. 39,
1. 10, 6, 4. आ नो अचक् जिगातन 5, 39, 6. प्र सप्तगुम्नधीतिं सुमेधां बृह-
स्पतिं मतिरचक् जिगाति 10, 47, 6.

— अति 1) vorübergehen, verstreichen (von der Zeit): एवं मे वसतो
राजन्नेष कालो ऽत्यगादिवि ARG. 4, 62. आयुषो ऽर्धमथात्यगात् Bhaṅ. P. 4,
27, 6. तस्य यौवनम-यगात् (lies: अत्यगात्) MBh. 2, 696. — 2) hingehen,
sterben: केनात्यगाद्वा व्याधिना R. 2, 72, 29. — 3) über Etwas hänge-
hen, — wegschreiten: अतिं श्रितो तिरश्चतो गृध्या जिगात्यायव्यो RV. 9,
14, 6. मा मे ऽवाद्गाभिमति गाः KĀTJ. Ç. 9, 12, 4. सुपर्णा इव वेगेन पात्तरा-
उत्यगाच्चम् MBh. 7, 5229. (नौका) बहूर्मिवेगाभिकृता गङ्गासलिलमत्य-
गात् R. 2, 32, 75. über Jmd wegschreiten, für Jmd verstreichen (von der
Zeit): मा त्वं कालो ऽत्यगादयम् MBh. 1, 6196. 3, 873. — 4) vorübergehen
an: अत्यन्धो अगो नान्यो उपगाम् VS. 5, 42. — 5) siegreich überschrei-
ten, überwinden, glücklich entkommen: अत्यगन्मायो देवानाम् Bhaṅ. P.
9, 20, 27. हिरण्यकशिपुश्चायि भगवन्नन्दया तमः । विवित्तरत्यगात्सुनोः
प्रकृदस्यानुभावतः ॥ 4, 21, 46. — 6) vorübergehen an, unbeachtet lassen:
न चैनमत्यगाद्द्विर्वेलामिव महोदधिः er achtete auf ihn, that was er
verlangt hatte MBh. 2, 1157. सो ऽनृतस्याभयपेशो मर्त्यमत्रं यदत्यगात्
(bei BURNOUF eine andere Auffassung) Bhaṅ. P. 2, 6, 17. प्राप्तकालमिदं
मन्ये मा त्वं उपोधानात्यगाः versäumen MBh. 5, 4212.

— व्यति vorübergehen an: नृपं तम् — सा व्यत्यादात्यबधूर्ध्ववित्री । म-
हीधरं मार्गवशादुपेतं स्रोतोवहा सागरगामिनीव ॥ RAGH. 6, 52.